International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 5; September 2018; Page No. 34-38

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : उपन्यासों में नारी पात्रों के रूप निरूपण का अध्ययन

डॉ० समयलाल प्रजापति
सहायक प्राध्यापक हिन्दी, शासकीय महाविद्यालय, बरका, जिला सिंगरौली, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों के प्रायः सभी नारी–पात्र सुन्दर हैं। यदि किसी के मुख–सौन्दर्य या वर्ण–प्रभा में कुछ न्यूनता है तो सौन्दर्य के अन्य विधायी–तत्वों में वृद्धि करके उसकी पूर्ति की गई है। इन नारी–पात्रों में अधिकतर तो गौरवर्णाएँ हैं और कुछ श्यामायें भी हैं। राज–बालायें प्रायः गौरांगी हैं। निम्न जाति की नारियों को श्याम वर्ण का निरूपित किया गया है। देव–मन्दिर स्वरूपा नारी–देह को न तो अपावन देख सकता था और न असुन्दर ही। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों के अधिकतर नारी–पात्र गौर–वर्ण के हैं। केवल कुछ निम्न जाति में जन्मी नारियाँ ही श्याम वर्णायें हैं। हाँ इतना अवश्य है कि ये श्याम वर्णायें भी सुन्दरियाँ हैं और आकर्षण–गुण–सम्पन्न हैं इससे भी अधिक वह रूपवती और गुणवती भी हैं।

मूल शब्द : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, उपन्यास, नारी पात्र, रूप निरूपण।

प्रस्तावना
'बाणभट्ट की आत्मकथा' की निपुणिका अधिक सुन्दरी नहीं है। उसका रंग भी साफ नहीं है। जब वह बाण की नाटक–मण्डली में सम्मिलित होने आयी तब ''उसका रंग शेफालिका के कुसुम–नाल के रंग से मिलता था।''[1] निपुणिका अभिनय सीखने लगी वह अभिनय कला में कुशल हो गयी थी। उज्जयिनी में बाण लिखित प्रकरण के अभिनय के आयोजन में निपुणिका ने अद्भुत कला का प्रदर्शन किया था। वह जब रंग–मंच से लौटी तब उसकी भावभंगी अनूठी थी। ''उसका दाहिना हाथ शिथिल श्यामलता के समान झूल पड़ा था।''[2] समर्पण विफला निपुणिका बाण की नाटक मण्डली से भाग पड़ी और अपने निष्ठुर प्रेमी बाण के चिर–जीवन की कामना से उज्जयिनी भी छोड़ आयी। वह बाण से छिपती फिरी और बाण उसे खोजता रहा। छः वर्ष बाद बाण ने स्थाणीश्वर में, पान बेचती हुई निपुणिका को खोज ही लिया। बाण एक नातिकमनीय मूर्ति रमणी की बाणी पर चौंकते हैं, उसकी पुकार पर मुड़ते हैं, उसे पहचानते हैं, वह निपुणिका थी। ''उसके मुखमण्डल पर तारुण्य था उसकी दीप्ति धुंधली पड़ गयी थी, जैसे धुंआ उगलती हुई दीप–शिखा हो।''[3] स्थाणीश्वर में बाण निपुणिका के निवास पर पहुंचा। स्त्रोत पाठ करती निपुणिका की अंग–प्रभा बाण को बड़ी मनोहर लगती है।

बौद्ध–बिहार में भट्टिनी के ध्यान–स्तिमित नयनों को देखकर जान पड़ता था कि ''महावराह की अपूर्व शोभा से विस्मय विमूढ़ होकर दो चपल खंजन–शावक चित्र लिखित–से स्थिर हो रहे हैं।''[4] भट्टिनी की बड़ी–बड़ी आँखें अपना उपमान आप ही थीं। सम्मोहन ग्रस्त बाण की सुश्रुषा भट्टिनी की ''जागर–खिन्न लाल आँखें धूल–लुंठित पलाश–पुष्प के समान, आतप–म्लान बन्धु जीवन–कुसुम के समान और पंजर बद्ध खंजन शावक की भांति दर्शक को व्यथित, खिन्न और उदास बना देती थीं।''[5] भद्रेश्वर में भट्टिनी की (राज्यश्री का पत्र पढ़ने के बाद) सकरुण बड़ी–बड़ी मनोहर आँखें भीगे हुए खंजन–शावक की भांति हतचेष्ट हो गयी थीं।

'चारु चन्द्रलेख' की परम सुन्दरी नारी चन्द्रलेखा के नेत्रों से, सातवाहन के साथ वन में, अद्भुत आभा क्षरित होती है मुहजोर घोड़े की तरह बाग न मानने वाली आँखों में सातवाहन को चराचर जगत को आकर्षित करने की शक्ति समाविष्ट हुई दिखती है। मानो वे मृग के से नेत्रों को प्रत्यक्ष देख रहे थे। राजा ने सिद्धि–विच्युत रानी को जब नाटीमाता के आश्रम पर देखा, तब उनकी वे मृगी सी आँखें – ''सफेद शंख–वराटिका के समान उज्जवल होकर भी राग–शून्य थीं, पाण्डुर अगस्त्य–पुष्प के समान बंकिम होकर भी चांचल्य रहित थीं, अनावृत सुक्ति–पटल के समान चमकदार होकर भी आभाहीन थीं।''[6] 'चारु चन्द्रलेख' की मैना भी आयत–नयना है। नाटीमाता के आश्रम पर मैना राजा की सेवा के लिए उपस्थित होती है। राजा को देखकर उसकी मृगशावक जैसी बड़ी–बड़ी आँखें प्रसन्नता से खिल गयीं और दूसरे ही क्षण विषाद से कुछ संकुचित भी हुयीं।''[7] उसके यही मृगशावक से आयत नेत्र अलहना बघेला की डांट पर रोने के बाद, गूलर–फल के समान हो गये थे और घुण्डकों से हुए युद्ध में आहत–अचेत मैना की आँखें सन्ध्याकालीन कमल–पुष्प की भांति मुंद गयी थीं। पद्यगन्धा सूहबदेवी के नेत्र कान तक फैले हुए थे, वे पद्य–पलाश की भांति प्रतीत होते थे।

'अनामदास का पोथा' उपन्यास की नायिका जनश्रुति की इकलौती कन्य जाबाला है। वह ग्रन्थ–नायक ऋषिकुमार रैक्व की प्रथम तो प्रेयसी और बाद में पत्नी है। आचार्य द्विवेदी के उपन्यास पात्र–बहुल है किन्तु यह उपन्यास सीमित पात्रों वाला है। आचार्य के पूर्व लिखित तीनों उपन्यासों में क्रमशः बाण–निउनिया–भट्टिनी, सातवाहन चन्द्रलेखा मैना और आर्यक मृणाल चन्द्रा के त्रिकोण हैं। पोथा में कोई त्रिकोण नहीं है। पोथा नायक रैक्व से जाबाला की अकस्मात् भेंट होती है। वे जाबाला को देवलोक का प्राणी समझते हैं। संज्ञा शून्य जाबाला को रैक्व चेत में लाते हैं। राज–बाला संकुचित है और रैक्व की सहायता अपने पिता के पास पहुंचने हेतु चाहती है। रैक्व अपनी 'शुभा' को पीठ पर रखकर पहुंचाने को उत्कण्ठित है। जाबाला, रैक्व के इस लोकाचार–विरोधी प्रस्ताव को अमान्य कर देती है। प्रस्ताव के अनौचित्य से अनभिज्ञ ऋषिकुमार चकित है। तभी जाबाला के अनुचर उसे खोजते हुये आ जाते हैं और वह रैक्व को कहीं छिप जाने को कहकर अपने घर पहुंच जाती है। अब जाबाला भोले रैक्व को भुला नहीं पाती है।

वर्ण–निरूपण

'बाणभट्ट की आत्मकथा' की राजबाला चन्द्र दीधिति गौरांगी है। शरद्कालीन मेघपुंज में अन्तरित चन्द्रकला–सी उसकी अंगप्रभा है। उसकी कुंकुम गौर कांति अत्यन्त मनोहर है। ''भट्टिनी की धवल कांति दर्शक के नयन–मार्ग से हृदय में प्रविष्ट होकर समस्त कलुष को धवलित कर देती थी मानो स्वमन्दाकिनी की धवल–धारा समस्त कलुष–कालिका का क्षालन कर रही हो।''[8]

पुनर्नवा की गणिका मुंजला शोभा–स्त्रोतस्विनी है। वह राजकोप–शमन के लिए देवरात की सहायता की याचना करने हेतु उनके आश्रम की ओर पैदल अस्त–व्यस्त दशा में चलती हुई भी नयनभिराम लगती है। ''मानों चन्द्रमा की स्निग्ध ज्योत्सना ही धरती पर उतर आयी है, पद्म–पवन की चारुता ने ही धूलि पर चलने का संकल्प किया है।''[9] मंजुला की जायी मृणाल अपूर्व सुन्दरी है। तीन वर्ष की फूल सी कोमल बालिका को देवरात झूले में से उठाते हैं ''मानों पूनम के चाँद को राहु ने ग्रस लिया हो।''[10] देवरात –पत्नी शर्मिष्ठा भी गौर–वर्णा थी क्योंकि वह और मंजुला 'वयसु वरन तनु एक' थी। चन्द्रा भी गौरांगी है। उसको सुमेर काका मृणाल के द्वार पर देखते हैं। उसके गोल गोरे मुख पर केश लटिया गये थे। वह विन्ध्य के साधु से मिलकर लौटने के बाद साधुओं की लम्पटता की चर्चा मृणाल से करती है। तब मृणाल से चुहल करती हुई कहती है –''गन्ध के साथ ऐसा वर्ण, ऐसी कांति, ऐसी प्रभा, ऐसी सम्मोहन–चारुता, एक साथ मिल जाये, तो ब्रम्हा का भी मन एक बार डोल जाये।''[11]

अंग निरूपण

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने उपन्यासों में नारी का अंग–निरूपण बहुत विस्तार से किया है। उनकी नारियाँ सर्वत्र मनोहर हैं, श्रृंगार की प्रतिमायें हैं। परन्तु ऐसी श्रृंगार–प्रतिमा जो वासना नहीं श्रद्धा जागृत करती है। उनके नारी–पात्र कहीं तुलसी की सीता के समान हैं तो कहीं प्रसाद की श्रद्धा की तरह। उनके बाह्य रूप उनके अन्तर की उदारता को प्रकटित करते हैं।

केश–वर्णन

आचार्य द्विवेदी की नायिकाओं का केश–वर्णन अत्यन्त स्वाभाविक और विस्तृत है। उनकी नारियों के केश घने–मेचक, सर्पिल, कोमल तथा भ्रमर–श्याम है। ''स्थाणीश्वर में पूजा–निरता निपुणिका के कुन्तल–जाल इस प्रकार विलुलित हो उठते थे, मानो महावराह के चरण–प्रांत में गिर पड़ने को व्याकुल हो उठे हों।''[12] भद्रेश्वर में सद्यस्नाता आर्द्रकेशा निपुणिका के मुख पर –''आर्द्रकेश ऐसे लग रहे थे मानो प्रभातकालीन चन्द्र–मण्डल के पीछे सजल जलधर लटके हों।''[13]

राजवाला भट्टिनी परम सुन्दरी नारी है। उसके केश भला क्यों मनोहर न होते ! स्थाणीश्वर के बौद्ध–बिहार में सद्य–स्नाता भट्टिनी की खुली हुई कवरी के छितराये सुवर्णाभ केश कुसुम की आभा से ऐसे मनोहर दिखायी दे रहे थे कि ''उन्हें देखकर सौवर्ण–सिरीष के सुकुमार तन्तुओं के पराग–पिंजर जाल का ध्यान हो आता था।''[14]

मुख–वर्णन

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने उपन्यासों में नारी–पात्रों के मुख के प्रति पारम्परिक चन्द्रमा, कमल, दीपशिखा आदि उपमानों का प्रयोग किया है। 'बाणभट्ट की आत्मकथा' की निपुणिका का स्थाणीश्वर में पान बेचने के समय का चित्रण करते हुए उपन्यासकार लिखते हैं – ''उसके मुख–मण्डल पर तारुण था, परन्तु उसकी दीप्ति धुंधली पड़ गयी थी, जैसे धुंआ उगलती दीप–शिखा हो।''[15] सुचरिता की सास का मुख काशी में बाण से भेंट करते समय कमल–पुष्प के समान खिन्न था। बौद्ध बिहार में उपस्थित महामाया का गैरिक वस्त्रों से कुण्डलित मुख–मण्डल धातुमयी अधित्यका के मध्य कुसुमित आरग्वध झाड़ के समान था। उनके मुख को लेखक ने ''कमल–कौरक के समान लम्बा सा''[16] बताया है। भद्रेश्वर में क्षीण–देह बाण को जागरण से रोकती हुई भट्टिनी का मुख नील–शाटी में से सौ गुना रमणीय दिख रहा था, ''मानो ज्योत्सना–रूप धवल मन्दाकिनी धारा में बहते हुए शैवाल जाल में उलझा हुआ प्रफुल्ल कमल हो, क्षीरसागर में सन्तरण करती हुई नील–बसना पद्मा हो, कैलाश पर्वत पर लिखी हुई सपुष्पा दमनय–यष्टि हो, नील मेघमण्डल में झलकने वाली स्थिर सौदामिनी हो।''[17]

नेत्र–निरूपण

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'बाण भट्ट की आत्मकथा' के उपसंहार में नेत्र–वर्णन की प्रधानता को स्वीकार किया है। उनकी रचनाओं में नेत्र–वर्णन की प्रचुरता तो है किन्तु उनकी नारियों के नेत्र बिहारी की नायिकाओं से 'मदभरे' नहीं हैं, 'नासा मोरि नचाई दृग' वाला चित्रण उन्होंने नहीं किया है। उनकी नायिकाओं के नेत्रों में जहाँ श्रृंगार का भाव है वहाँ गोस्वामी तुलसीदास जैसा 'खंजन–मंजु तिरीछे नयनन' का भाव है। आचार्य के नारी–पात्रों के नेत्रों में सम्मोहन तो है किन्तु निमन्त्रण नहीं, वासना नहीं, 'बाण भट्ट की आत्मकथा' की नायिका निपुणिका की सबसे बड़ी चारूता–सम्पत्ति उसकी आँखे और अंगुलियाँ ही थीं। उज्जयिनी से भागी निपुणिका को बाण छः वर्ष बाद स्थाणीश्वर में मिला तब – ''उसकी कोटरगत आँखे मानो उद्वेल वारिधारा से परिपूर्ण होकर प्रफुल्ल पुण्डरीक के समान विकसित हो गयी थी।''[18] बौद्ध–बिहार में उसी निपुणिका की कोटर–शायिनी आँखों में जागर खेद देखकर बाण को लगा था – ''मानो प्रफुल्ल कांचनार–कुसुम पर चन्द्रमा की धवल–प्रभा पड़ी हुई है।''[19]

भौहें

गंगाधारा – विनिर्गता भट्टिनी के भ्रू–युगल और भी जिन्ह हो गये थे और जब वह भद्रेश्वर में निपुणिका के विषय में बाण से बात करने को प्रस्तुत होती है तब उसकीं कातरता के कारण शिथिल बनी हुई ''भ्रूलताये मानो–जन्म देवता के भग्न–चाय की भांति भीषण मनोहर शोभा का विस्तार कर रही थीं।''[20] आचार्य द्विवेदी जी ने भीषण मनोहर का कैसा अनोखा विरोधाभास प्रस्तुत किया है। चारु चन्द्रलेख में चन्द्रलेखा की भौंहें राजा को दो प्रतिभटों के काले धनुष जैसी लगती है। राजा को मैना की कान तक फैली हुई मसृण भ्रू–लताओं के नीचे अरुणायित नेत्र सुन्दर लगते हैं।

अधर

भट्टिनी के आताम्र अधरोष्ठ बाण को अशोक–किशलय के समान दिखायी पड़ते हैं। भद्रेश्वर में राज्यश्री के पत्र को पढ़कर अपमान का अनुभव करती हुई भट्टिनी के – ''बन्धुजीव–पुष्प के समान लाल–लाल अधर क्षण भर में आतप–म्लान केतक–पुष्प के समान फीके पड़ गये थे।''[21] स्थाणीश्वर के निकट, स्कन्धवार में, कुमार कृष्ण वर्द्धन को भाई के रूप में पाकर भट्टिनी के अधरों में बन्धूक–बन्धुता और भी अधिक निखर आयी थी। 'चारु चन्द्रलेख' की चन्द्रलेख के अधर भी बन्धूक समान हैं। विष्णु प्रिया के आश्रम की गुहा से बाहर आती हुई चन्द्रलेखा के प्रबाल–शोण अधरों पर हल्की स्मित–रेखा खेल गयी थी।

कपोल

भद्रेश्वर में बाण का मार्ग–दर्शन करती हुई निपुणिका की कपोल पालि विकच पुण्डरीक की शोभा धारण किये थी। स्थाणीश्वर के स्कन्धावार में कुमार कृष्णा वर्द्धन से मिलती हुई भट्टिनी के कपोलों की मधूक–पुष्प के समान मोहक कांति और भी मधुर हो गयी थी। 'चारु चन्द्रलेख' में राजा नाटीमाता के आश्रम पर विश्रामलीना रानी और सेवारता मैना को सरकण्डों के छिद्र से देखते हैं। किशोरी मैना के –''मुलायम उभरे हुए कपोलों से दरेरा देकर प्रदीप रश्मियाँ बाहर निकलने का प्रयास कर रही थी।''[22]

बाहें, हथेलियाँ और अंगुलियाँ

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सभी नारियों की बाहों को मृणाल नाल सी कोमल कहा है। बाणभट्ट की आत्मकथा की भट्टिनी, मदनश्री और चारु चन्द्रलेख की चन्द्रलेखा की बांहों को मृणाल नाल की उपमा दी है। विष्णुप्रिया के आश्रम पर राजा को प्रणाम करती चन्द्रलेखा की ऊपर उठती बाहें चन्द्रमा की मारीचि–माला सी प्रतीत होती हैं। नाटीमाता के आश्रय पर आहत–अचेत मैना के मुख पर फिरती रानी की हथेलियाँ ऐसी जान पड़ती हैं मानो कल्पलता के किसलय चन्द्रमा पर सुधा–लेप करा रहे हों[23] और राजा के द्वारा मैना स्वयं को नारी रूप में देख लिये जाने पर कमल कोरक के समान हाथ जोड़कर राजा के पैरों पर गिर पड़ती है। निपुणिका को बाण उसकी पतली छरहरी अंगुलियों के कारण अपनी नाटक मण्डली में लेता है। बौद्ध बिहार में वराह–मूर्ति के समक्ष ध्यान–मग्न भट्टिनी के अंजलिबद्ध सुकुमार करतलों की अंगुलियाँ इतनी अभिराम दिख रही थीं कि वे प्रफुल्ल–मालती से आच्छादित तरुण अशोक के कोमल किशलय–सी प्रतीत हो रही थीं। भद्रेश्वर में लोरिकदेव के सम्मान को स्वीकारती हुई देवपुत्र–नन्दिनी ने प्रबाल–किशलय के समान कोमल अगुलियों से ताम्बूल–पत्र छू दिये थे।

अन्य अंग

आचार्य जी के नारी पात्रों के मस्तक अष्टमी–चन्द्र से चित्रित हुए हैं। चाहे चन्द्रदीधिति हो, महामाया हो, रानी चन्द्रलेखा हो, मृणाल या चन्द्रा कोई भी हो। नासिका का वर्णन कम ही हुआ है। केवल रानी चन्द्रलेखा की नासिका को किंचित धनुधायित कहा है। एक स्थान पर चन्द्रलेखा की नासिका को तिल–पुष्प की उपमा दी है। दन्त–पंक्ति का उल्लेख मदनिका के सन्दर्भ में मोती के सादृश्य से किया गया है। ग्रीवा को बन्धु विडम्बना कहा है, सीमान्त रेखा को अंधेरी रात के दीपोद्भाषित राजमार्ग की उपमा दी है, तो कहीं–कहीं कसौटी का कंचन–रेखा भी कहा है। पगतल पद्म–पलास को लज्जित करने वाले हैं।

सौन्दर्य–प्रसाधन

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों के नारी–पात्रों में सहज सौन्दर्य है। वे अमण्डनीकृत होकर भी मनोहर हैं। उनकी नारियाँ रत्नों की भी सुन्दरता बढ़ाने वाली हैं। बाणभट्ट की आत्मकथा में सुचरिता के संबंध में आचार्य ने रत्नानि विभूषयन्ति योषा, वराहमिहिर के कथन के इस मत की पुष्टि ही नही की है वरन् वराहमिहिर से आगे बढ़कर वे लिखते हैं – नारी देह वह स्पर्श मणि है जो प्रत्येक ईंट पत्थर को सोना बना देती है। तथापि श्रृंगार करना मानव स्वभाव है। ये नारी पात्र भी श्रृंगार करते हैं। वस्त्राभूषण के अतिरिक्त नारियाँ कालानुसार सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग करती हैं। इन प्रसाधनों में पुष्पादिक प्रधान हैं।

वस्त्र अलंकरण

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों की नारियाँ सूती, पाटल और कौशेय वस्त्र धारण करती हैं। उनके ये वस्त्र कुसुम्भ बासन्ती, नील, स्वेत और गैरिक रंगों के हैं। आचार्य जी ने आभूषणों का भी वर्गीकरण प्रस्तुत किया है। आरोप्य, आदेध्य और प्रक्षेप्य वर्गों में उन्होंने अलंकारों को बांटा है। देश में विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के आभूषणों के प्रचलन बताये हैं। प्रायः राजबालाएँ आभूषण धारण करती हैं।

नायिका रूप

प्रायः नायक की पत्नी या उसकी प्रेमिका को नायिका माना जाता है। नायिका को शील–सम्पन्ना, तेजमयी, प्रभावशालिनी, गरिमामयी तथा कर्त्तव्यवती नारी होना चाहिए। नायिका होने के लिए आवश्यक है कि वह कथा–विकास में महत्वपूर्ण योग दे, कथा का केन्द्र हो, उसका व्यक्तित्व कथा प्रसंगों पर छाया रहे, कथा की वांछित परिणति में उसका महत्वपूर्ण योगदान हो, वह फल की भोक्ता हो तथा रचना के प्रतिपाद्य को उजागर करे।

बाणभट्ट की आत्मकथा में दो नारी–पात्र महत्वपूर्ण हैं – पहली निपुणिका और दूसरी चन्द्रदीधिति जिसे निपुणिका ने भट्टिनी नाम दिया है। दोनों से ही कथा – नायक बाण संबंधित है। प्रथम का प्रेम बाण के प्रति तृप्त है तो दूसरी का अतृप्त। परन्तु सभी दृष्टियों से विचार करने पर निपुणिका नायिकत्व के अधिक निकट है। निपुणिका कथा–नायक बाण की प्रेमिका है। विधवा निउनिया उज्जयिनी आकर बाण की नाटक मण्डली की सदस्य बन जाती है। बाण किंचित संकोच के साथ इस युवती को सम्मिलित कर लेते हैं। वह अभिनय कला शीघ्र सीखकर मंच पर उतरने लगती है।

बाणभट्ट की आत्मकथा का नायिका निर्णय यों आसान काम भी नहीं। जहाँ दो नारी–पात्र समान गरिमामय हों, वहां निर्णय में द्विविधा उत्पन्न होना स्वाभाविक बात है। निपुणिका और भट्टिनी दोनों का व्यक्तित्व महत्वपूर्ण है। नायक बाण से दोनों का संबंध है। यह तय कर पाना कठिन है कि बाण का संबंध निपुणिका से अधिक है या भट्टिनी से। परन्तु भट्टिनी को बाण से मिलाने का श्रेय निपुणिका को प्राप्त है। इस प्रकार नायक संबंध से निपुणिका ही नायिका सिद्ध होती है। भट्टिनी की भी स्थिति उपन्यास में महत्वपूर्ण है। उच्चकुलोद्भवा, धीरोदात्त, कुल–कन्या है। सम्पूर्ण कथा मानों उसी के आस–पास घूमती है। कथा केन्द्र की दृष्टि से भट्टिनी नायिका की पात्र होती है। फल–प्राप्ति से विचार किया जाये तो पुनः निपुणिका नायिका हो जाती है। इस रचना का फल 'अशोक–वन की सीता भट्टिनी' का उद्धार है। निपुणिका ही इस असाध्य साधन के हेतु है। बाण तो इस महान मोचन का निमित्त मात्र है। इस प्रकार सभी दृष्टियों से विचार करने पर निपुणिका भट्टिनी में से निपुणिका ही आत्मकथा की नायिका सिद्ध होती है।

पुनर्नवा उपन्यास का नायिका प्रकरण चारु चन्द्रलेख जैसा सुनिर्णीत नहीं है। वाणभट्ट की आत्मकथा के समान द्विविधामय है। एक मत के अनुसार संघर्षशील और जीवन्त पात्र चन्द्रा नायिका होती है, तो दूसरे मत से गोपासी तपस्विनी मृणाल मंजरी। यों महानता की दृष्टि से विचार करने पर मृणाल का पलड़ा भारी हो जाता है। मृणाल मंजरी कमल कीच ते होय, का उदाहरण है। वह वेश्या–पुत्री होकर भी रानी का पद पाती है। वह अपने सदाचरण से सबकी पूजनीया बनती है। उसने शील–बल से महानता अर्जित की है। सत्य ही उसने मातृ–कोख से आये पंक को सदाचरण, सद्गुण और सेवा की त्रिवेणी के पावन नीर से प्रक्षालित किया है। वह राजमान

और लोकमान पाती है। सम्राट समुद्रगुप्त भी उसके चरणों की वन्दना करके धन्य होते हैं।

पुनर्नवा में मृणाल मंजरी का चरित्र एक महान सती नारी का चरित्र है। उसके ह्रदय में माता–पिता, गुरु का संयुक्त महत्व रखने वाले पूज्य देवरात के प्रति अगाध श्रद्धा है। परन्तु वह अन्ध श्रद्धालु, मात्र अनुगामिनी नारी नहीं है। देवरात उसे सिंह–वाहिनी की उपासिका बनने की प्रेरणा देते हैं। परन्तु वह सिंह–वाहिनी से आगे बढ़कर, महिष–मर्दिनी दुर्गा की उपासिका होकर अन्याय का सक्रिय विरोध करने को उत्सुक हैं। मृणाल की शंका का समाधान विद्वान देवराज –''महिष–मर्दिनी की उपासना की बात केवल काव्य में फबती है, व्यवहार में नारी के लिये उसका सिंहवाहिनी रूप ही उचित है।''[24] कहकर करना चाहते हैं, परन्तु मृणाल की शंका जीवित है। वह विचारती है जो बात कविता में फबती है, वह व्यवहार में क्यों नहीं फबेगी? और आगे चलकर फक्कड़ सुमेर काका के समक्ष भी शंका प्रस्तुत करती है। मृणाल 'पुरुषों की आरती उतारने' मात्र को नारी धर्म नहीं मानती है। वह पशुवल को शक्ति के साथ ललकारने के पक्ष में है। वह नारी के अबला विशेषण से असहमत है।

प्रतिनायिका रूप

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में नायक–नायिका प्रति नायिका का रूढ़ त्रिकोण अप्राप्त है। बाणभट्ट की आत्मकथा और चारु चन्द्रलेख दोनों रचनाओं में क्रमशः बाण निपुणिका भट्टिनी तथा सातवाहन चन्द्रलेखा मैना तीन–तीन प्रधान हैं। ये पात्र परस्पर कोई त्रिकोण नहीं बनाते। इसमें न कोई द्वन्द्वभाव है, न संघर्ष। इन पात्रों को एक रेखा के तीन बिन्दु कहा जा सकता है। हाँ, बाण और सातवाहन नामक नायकों के निपुणिका भट्टिनी तथा चन्द्रलेखा मैना के दोनों हाथ माने जा सकते हैं। हाँ, विचारणीय बात यह हो सकती है कि इनमें से कौन दायाँ हाथ है और कौन बाँया। निपुणिका और भट्टिनी में किसी भी बिन्दु पर कोई मतभेद नहीं है। वरन् भट्टिनी की उद्धारिका निपुणिका बाण को प्रेरित करती है, भट्टिनी को और अधिक सम्मान देने हेतु। बाण के स्थाणीश्वर में सभासद नियुक्त होने और भट्टिनी के लिए राज्यश्री के आमन्त्रण–पत्र लाने के प्रकरण पर उत्तेजित निपुणिका कहती है –''धिक्कार है भट्ट, तुम कैसे भट्टिनी का अपमान करने पर राजी हो गये?''[25] वह भट्टिनी की उद्धारिका, सखी और संरक्षिका भी है। उसने भट्टिनी का उद्धार ही नहीं पुनरुद्धार भी किया है। छोटे राजकुल के वासना–बिहार से मुक्त कराने के बाद निपुणिका गंगा में भट्टिनी के कूदने का अनुसरण इसलिये करती है ताकि बाण भी कूदकर भट्टिनी का उद्धार करे। बाण कूदकर निपुणिका को बचाना चाहता है परन्तु निपुणिका स्पष्ट निर्देश देकर भट्टिनी का उद्धार कराती है। अतः भट्टिनी को प्रतिनायिका मानने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। निपुणिका के मन में भट्टिनी के लिये अनुजा–सा स्नेह और स्वामिनी–सी श्रद्धा है। भट्टिनी निपुणिका के प्रति कृतज्ञ है उसका सम्मान करती है। अस्तु भट्टिनी को आत्मकथा की प्रति नायिका नहीं कहा जा सकता, हाँ उसे सहनायिका माना जाना संगत बात होगी।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत शोध पत्र में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने नारी के रूप निरूपण के अन्तर्गत उसका नख से लेकर शिख तक वर्णन किया है। द्विवेदी जी के चारों उपन्यासों में नारी पात्र रूप वर्णन में अद्वितीय है। पुनर्नवा की विरह–व्यथित मृणाल के उदास मुख पर उसके केश लटिया कर एक वेणी बने हुये थे। चन्द्रा भी परम सुन्दरी है। विन्ध्य के सिद्ध बाबा उससे कहते हैं –''तेरे केश घन–कुंचित हैं, ये तो अखण्ड सौभाग्य की सूचना देते हैं।''[26]

पुनर्नवा की मंजुला प्रथम राज्योत्सव में नृत्यमग्न थी। उसका मुखमण्डल चारियों के वेग से इस प्रकार घूम रहा था कि ''जान पड़ता था शत–शत चन्द्र–मण्डल ही आरत्रिक प्रदीपों की अराल–माला में गुंथकर जगर–मगर दीप्ति उत्पन्न कर रहे थे।''[27] मृणाल के लिए भी आचार्य ने अनूठी अपमा की योजना की है। अपनी बाल–क्रीड़ा संगिनी मृणाल से तीन वर्ष तक अलग रहने के बाद आर्यक ने उसे, गुरु देवरात के आश्रम पर देखा। युवती हो आयी मृणाल के दुग्ध–मुग्ध मुख में इस प्रकार उफान आया था जैसे अचानक दुग्ध–भाण्ड को अप्रत्याशित ताप मिल गया हो।''[28] चन्द्रा का मुख भी चन्द्रमा के समान है। उससे मृणाल कहती है –''तुम्हारा यह प्रफुल्ल मल्लिका सा रूप और उसकी मोहक सुगन्ध, तुम्हारा निश्छल अनुराग जादू के समान प्रभाव डालने वाला है।''[29]

पुनर्नवा की गणिका मंजुला राजसभा में नृत्यरत थी। उसकी–''बड़ी–बड़ी काली आँखें कटाक्ष–पिक्षेप की घूर्णमान परम्पराओं का इस प्रकार निर्माण कर रही थी, जैसे नील–कमलों का चक्रवाल ही चंचल हो उठा हो।''[30] सुमेर काका ने विरह–व्यथित मृणाल की आँखों में एक विशिष्ट ज्योति देखी थी जैसे शाणघर्षित मणि हो, शरत्कालीन उत्फुल्ल पद्म हों। आर्यक समुद्रगुप्त का महाबलाधिकृत बनकर तीन वर्ष तक युद्ध अभियान पर रहा। तीन वर्ष बाद घर लौटा। उसने मृणाल की एवं हिरण की आँखों से प्रतियोगिता करने वाली आँखों के भीतर धंसा हुआ पाया। श्यामरूप को देखकर मदनिका की सुन्दर आँखें चंचल हो उठी थीं –''मानहु सुर–सरिता विमल जल उछरत जुग मीन।' का दृश्य उपस्थित हो गया था।

'अनामदास का पोथा' में ऋषिकुमार रैक्व मूर्छित जाबाला के नेत्रों को देखकर विस्मित होते हैं – ''ऐसी आँखें तो मनुष्य की नहीं होती। ये तो मृग की आँखें हैं। अवश्य ही इस प्राणी ने मृग की आँखें लेकर अपने चेहरे पर बैठा ली है। जाबाला के चले जाने के बाद रैक्व उसके दिव्यरूप के विषय में सोचते हैं – ''शुभा की मृगछोंने की सी आँखें, अमृत की सी वाणी है।''[31]

इस प्रकार सम्पूर्ण अंगों के निरूपण में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के नारी–पात्रों मे मनोहरता के साथ शालीनता और संयुक्त है। शील–समन्वित सौन्दर्य, श्रद्धा, उत्पादक सौन्दर्य का चित्रण करना ही लेखक का लक्ष्य है।

सन्दर्भ

1. बाणभट्ट की आत्मकथा, पृष्ठ 17.
2. वही, पृष्ठ 19.
3. बाणभट्ट की आत्मकथा, पृष्ठ 17.
4. वही, पृष्ठ 68.
5. बाणभट्ट की आत्मकथा, पृष्ठ 189.
6. चारु चन्द्रलेख, पृष्ठ 142.
7. वही, पृष्ठ 225.
8. वही, पृष्ठ 39.
9. पुनर्नवा, पृष्ठ 20.
10. वही, पृष्ठ 28.
11. वही, पृष्ठ 188.
12. बाणभट्ट की आत्मकथा, पृष्ठ 26.
13. वही, पृष्ठ 304.
14. वही, पृष्ठ 116.
15. बाणभट्ट की आत्मकथा, पृष्ठ 16.
16. वही, पृष्ठ 104.

17. वही, पृष्ठ 208.
18. बाणभट्ट की आत्मकथा, पृष्ठ 26.
19. वही, पृष्ठ 68.
20. बाणभट्ट की आत्मकथा, पृष्ठ 305.
21. बाणभट्ट की आत्मकथा, पृष्ठ 288.
22. चारु चन्द्रलेख, पृष्ठ 133.
23. चारु चन्द्रलेख, पृष्ठ 208.
24. पुनर्नवा, पृष्ठ 39.
25. बाणभट्ट की आत्मकथा, पृष्ठ 289.
26. पुनर्नवा, पृष्ठ 191.
27. पुनर्नवा, पृष्ठ 12.
28. वही, पृष्ठ 50.
29. वही, पृष्ठ 186.
30. पुनर्नवा, पृष्ठ 12.
31. अनामदास का पोथा, पृष्ठ 29.